उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन

विस्तार:

- पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढलान
- उत्तर-पूर्वी पहाड़ियों तथा
- अंडमान निकोबार द्वीप समूह

परिस्थितियाँ:

- उष्णार्द्र क्षेत्र
- वर्षा की मात्रा - 250 सेंटीमीटर से अधिक
- वार्षिक औसत तापमान - 22 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक

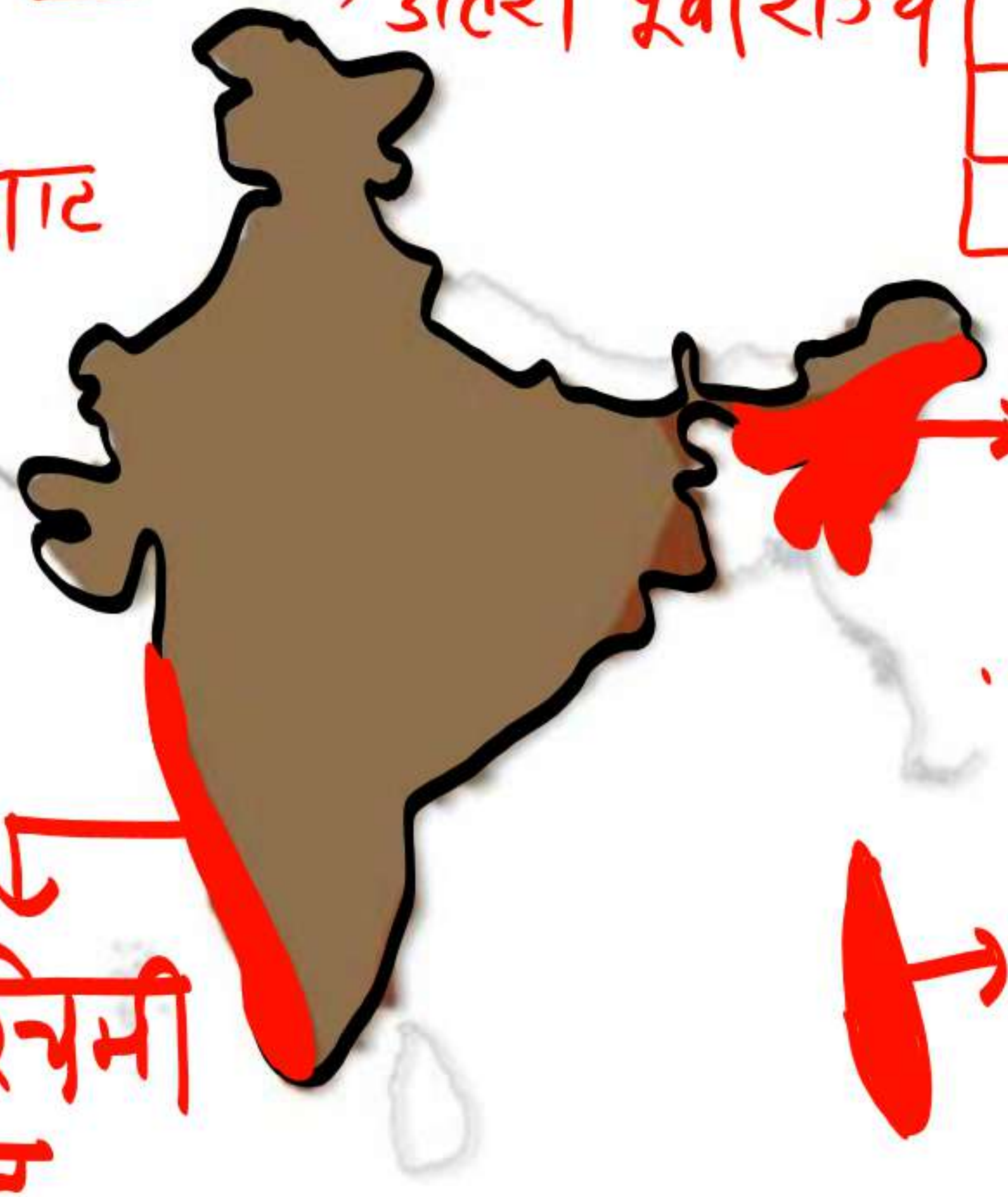

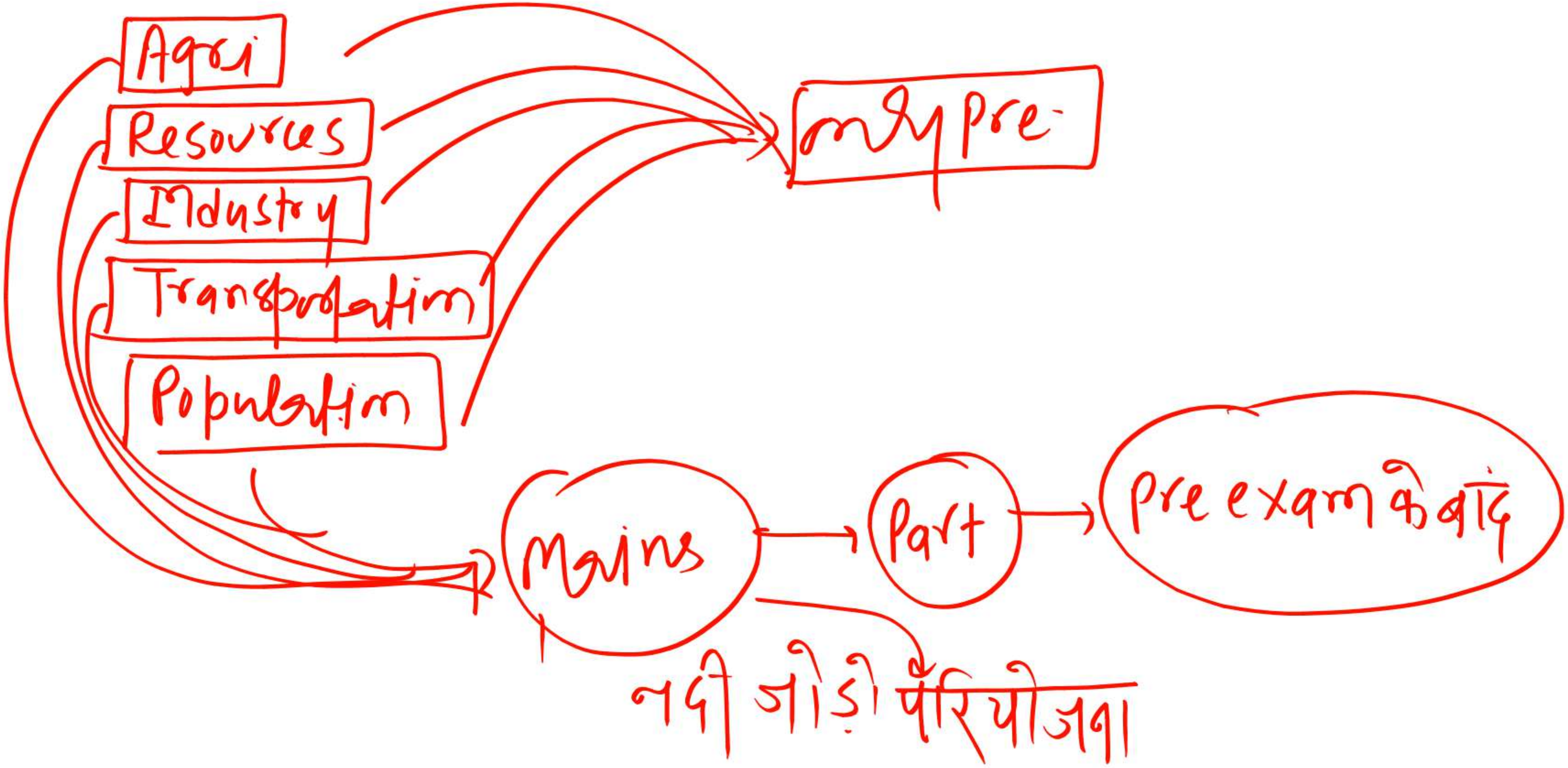
Agri
Resources
Industry
Transportation
Population
only pre
Mains
Part
Pre exam के बाद
नदी जोड़ो परियोजना

सदाहरित वनस्पति
Evergreen vegetation

→ जहां पर वर्षा 250cm एवं इससे अधिक होती है। (वार्षिक वर्षा - Anual Rainfall)

विशेषता
Characteristics

- सघन वनस्पति का उदाहरण
- वृक्षों की प्रजातियां अधिक होती हैं।
- ये वृक्ष पूरे वर्ष हरे-भरे होते हैं।
- लंबे-लंबे वृक्ष होते हैं।
- चौड़ी पत्तीयों वाले वृक्ष होते हैं।
- कठोर लकड़ी वाले वृक्ष होते हैं।
- सूर्य के प्रकाश हेतु प्रतियोगिता होती है।
- वृक्षों का ऊपरी भाग छतरीनुमा / कैनोपी की तरह होता है।
- वृक्षों के कई परतें होती हैं।
- सतह पर सूर्य के प्रकाश का अभाव होता है।
- सतह पर अंधेरा होता है।
- सतह पर लतायें विकसित होती हैं जो कि वृक्षों के चारों तरफ लिपटी होती हैं।

- जंगलों में प्रवेश करना कठिन कार्य है।
- हवाई सरिताओं की उपस्थिति होती है।
- जैव विविधता प्रचुर पायी जाती है (Rich Biodiversity)
- विशेष प्रकार के कीट एवं मक्खियां पैदा होती है जो कि जहरीली भी होती है।

प्रमुख वृक्ष → महोगनी, रोजवुड, आबनूस

भारत में वनस्पति के प्रकार (Types of Vegetation)

Tropical Evergreen Vegetation

उष्ण कटिबंधीय सदाहरित वन / सदाबहार वन

- विस्तार
- Characteristics / विशेषतायें
- Tree / वृक्ष
- other Important Things / अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

Tropical Evergreen Vegetation

उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन

उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन

विशेषताएँ:

- वनस्पतियों का विकास सघन एवं स्तरों के रूप में
- वृक्षों की ऊँचाई 60 मीटर से अधिक
- सतह पर झाड़ियों एवं लताओं की अधिकता
- वर्ष भर हरे भरे
- वनों की लकड़ियाँ अधिक कठोर

ऐनी
रबड़ → अमेजन नदी घाटी/बेसिन का मूल पौधा
सिनकोना
बाँस

वनस्पतियाँ:

- महोगनी, ऐनी, आबनूस, रोजवुड, रबड़, सिनकोना, बाँस आदि

Other facts

- कृषि कार्य कठिन है।
- शिकार, पशुपालन, लकड़ी काटना इत्यादि कार्य
- कहीं-कहीं जंगलों को जलाकर झूम कृषि की जाती है।
  - ↓ Slash and Burn Cultivation

Note

स्थानांतरणशील कृषि

Shifting cultivation Name → Country

Ray – वियतनाम

May → Laose

चेना — श्रीलंका

लदांग — इंडोनेशिया, जावा

झूम — भारत → (North East)

मिल्पा → Mexico

रोका → Brazil

कोनुको — Venezuela

Point to be Learn

उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन

Tropical Desiduous vegetation

- सर्वाधिक व्यापक वन
- अन्य नाम - मानसूनी वन
- वर्षा की मात्रा - 70 से 200 सेमी
- जल की उपलब्धता के आधार पर दो वर्गीकरण
    - आर्द्र पर्णपाती
    - शुष्क पर्णपाती

→ उत्तर भारत का विशाल मैदान
→ प्रायद्वीपीय पठार का अधिकांश भाग

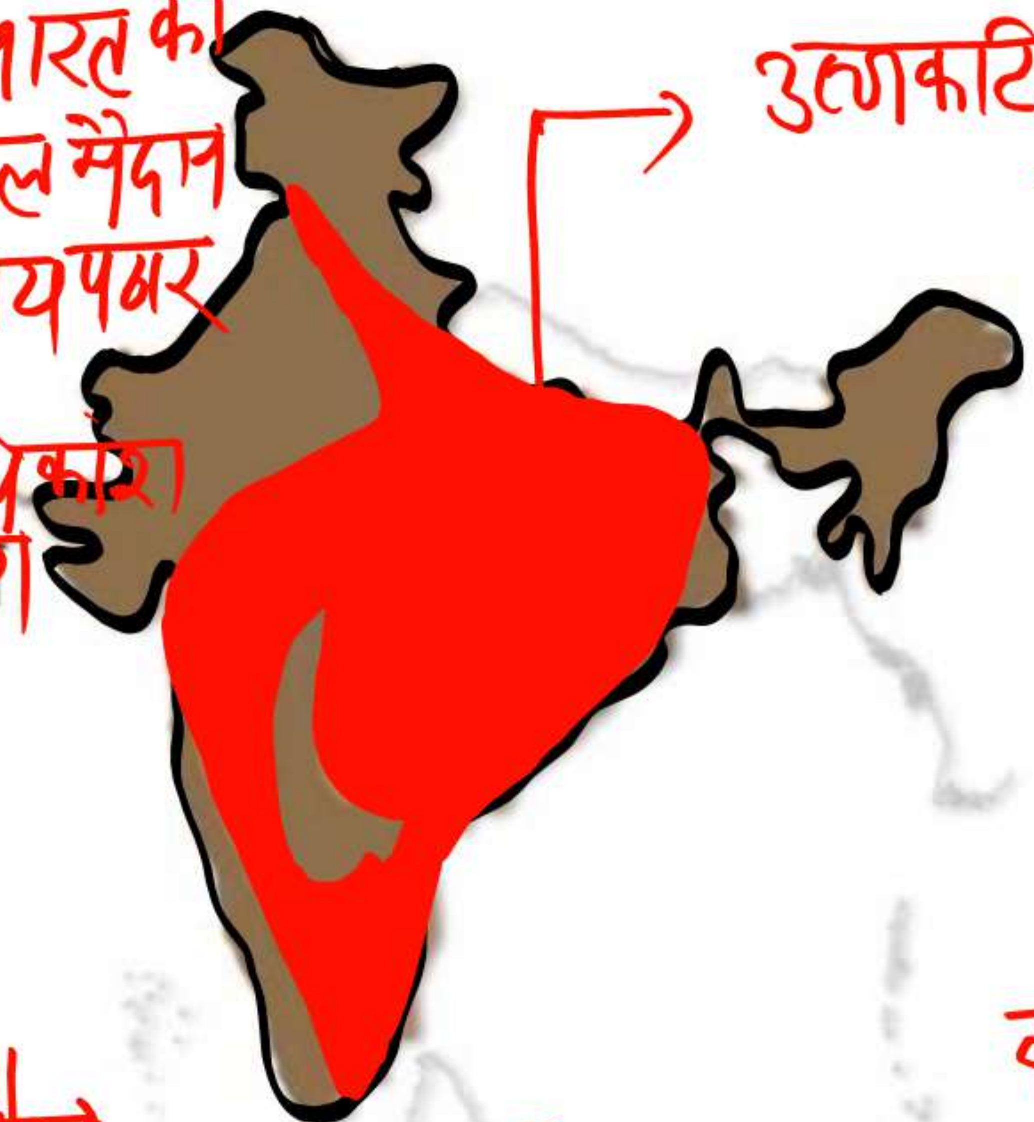

→ उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनस्पति
↳ देश के अधिकांश भाग में / हिस्से पर
↳ मानसूनी वन भी कहा जाता है।
क्योंकि ये मानसूनी जलवायु प्रदेश में उपस्थित हो

मानसूनी जलवायु
↓
विशेषता
↳ गर्म जलवायु
↳ अधिकांश वर्षा ग्रीष्म ऋतु में

पर्णपाती वनस्पति
मानसूनी वनस्पति → 70 – 200cm वार्षिक वर्षा

विशेषता
Characteristics

- भारत के अधिकांश भूभाग पर स्थित है।
- विशेष मौसम में जल के अभाव की समस्या को दूर करने हेतु पत्तियां गिरा देते है।
- अपेक्षाकृत कम सघन (सदाबहार की तुलना में)
- वृक्षों की अपेक्षाकृत कम प्रजातियां (सदाबहार की तुलना
- इमारती / महंगी लकड़ी प्राप्त होती है।
- इन वनों का दोहन अधिक हुआ है

→ शीशम, सागौन, साल
जामुन तथा अन्य

Other Facts
अन्य तथ्य

→ वर्षा के आधार पर वर्गीकरण | Classification on the basis of Humidity / Rainfall.

- आर्द्र प्रदेश (Humid Region)
  ↓
  100–200 CM
  (150–200 CM)
  ↓
  आर्द्र पर्णपाती
  Humid/Moist Deciduous

- 70–100 CM
  → शुष्क पर्णपाती (Dry Desiduous)

आर्द्र पर्णपाती वन (Moist Deciduous Forests)

विस्तार:

- हिमालय के शिवालिक गिरिपद, भाबर एवं तराई क्षेत्र
- पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलान, ओडिशा
- महाराष्ट्र, कर्नाटक, बंगाल, उत्तर प्रदेश इत्यादि

जलवायु:

- वार्षिक वर्षा - 100 से 200 सेंटीमीटर तक
- तापमान - 18 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक

विशेषताएँ: भारत की मानसूनी जलवायु का प्रभाव अधिक

वनस्पतियाँ: सागौन, टीक, साल, शीशम, चंदन, हुर्रा, महुआ, आँवला, सेमल, कुसुम, इत्यादि

100-200CM → Rainfall वर्षा

Temp → 18° से अधिक

→ शिवालिक का पदीय क्षेत्र Foothills Region of Shiwalik

→ तराई प्रदेश (Tarai Region)

→ पं. बंगाल, उत्तर प्रदेश (पूर्वी भाग) Bihar, उड़ीसा

→ महाराष्ट्र

→ कर्नाटक

शुष्क पर्णपाती वन (Dry Deciduous Forests)

विस्तार:

- उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगना, कर्नाटक, पश्चिमी बिहार इत्यादि

जलवायु:

- वार्षिक वर्षा - 70 से 100 सेंटीमीटर तक

विशेषताएँ:

- वनों की सघनता में कमी
- शुष्क ऋतु में अत्यधिक वाष्पीकरण से बचने के लिए पतझड़
- वनस्पतियों के बीच में विस्तृत घास भूमियों की उपस्थिति

वनस्पतियाँ:

- तेंदू, पलास, अमलतास, [redacted], बेल, खैर इत्यादि

कांटेदार वन

Thorny Types of Vegetation

विस्तार →
- राजस्थान
- गुजरात
- पंजाब
- हरियाणा

} → शुष्क प्रदेश

→ पश्चिमी घाट की पहाड़ी का वृष्टि छाया प्रदेश (Rainshow Region of Eastern Ghat Mountain)

अन्य state
↓
Delhi
→ अर्द्धशुष्क प्रदेश

विशेषतायें
Characteristics

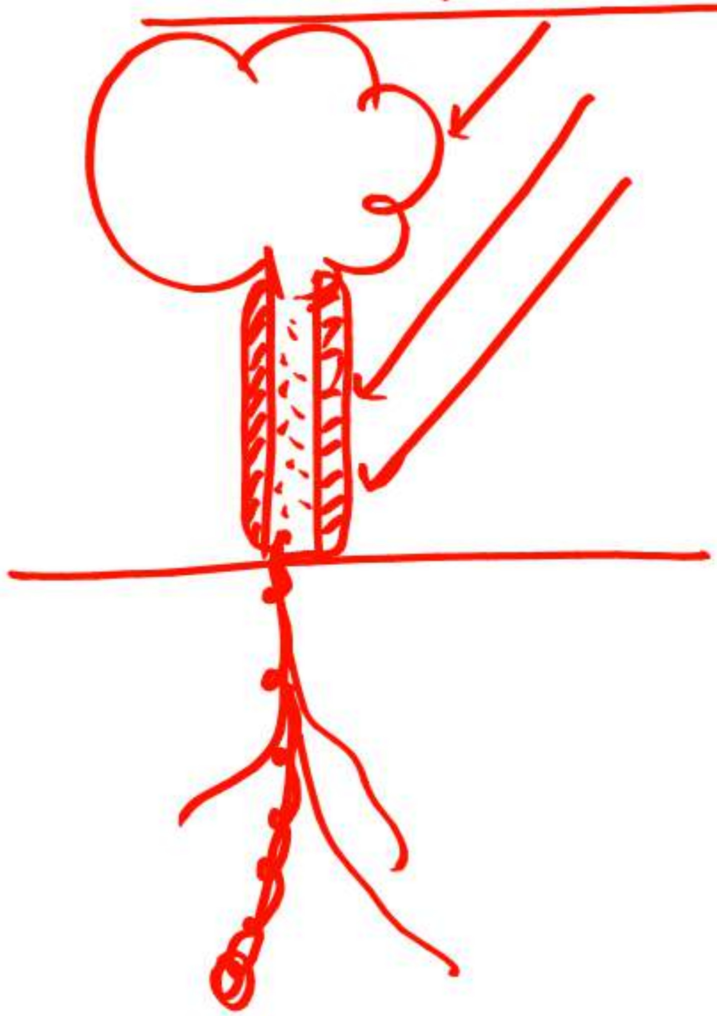

- ये कमवर्षा वाले क्षेत्र में विकसित होती है।
- जल का अभाव होता है।
- जड़े गहरी होती है।
- पत्तीयां छोटी होती है।
- तनो के चारोतरफ मोटी छाल होती है।
- काटो का विकास होता है। काटे पाये जाते है।
- वृक्ष → नॉगफनी, बबूल, बेर

Other facts. → **Dry Region** शुष्क प्रदेश।

- Rainfall वर्षा ↓
  - कृषि कार्य Agriculture
    - शुष्क कृषि | Dry farming
      - मोटे अनाज का उत्पादन
      - दलहन एवं तिलहन का उत्पादन
    - पशुपालन

पर्वतीय वन (Montane Forests)

- पर्वतीय क्षेत्रों में ऊँचाई के बढ़ने से तापमान में आने वाली कमी के कारण प्राकृतिक वनस्पतियों में परिवर्तन

पर्वतीय वनों का वर्गीकरण:

- उत्तरी पर्वतीय वन और हिमालय पर्वतमाला के वन
- दक्षिणी पर्वतीय वन

Vegetation | वनस्पति → Growth | वृद्धि

- → Rainfall
  वर्षा (Humidity)
- → Temperature
  (तापमान)

Mountain Region
पर्वतीय प्रदेश

→ Height (ऊंचाई) ↑ → Temp (ताप) ↓
→ Rainfall (वर्षा) ↓

→ (कम होती है)

→ वनस्पति के प्रकृति (Nature of Vegetation)

→ परिवर्तन Changes

हिमालय प्रदेश (Himalayan Region)

- Western Himalayan Region
  पश्चिमी हिमालय
  - ↳ Rainfall (वर्षा) ↓
- Eastern Himalayan Region (पूर्वी हिमालयन प्रदेश)
  - ↳ वर्षा (Rainfall) ↑

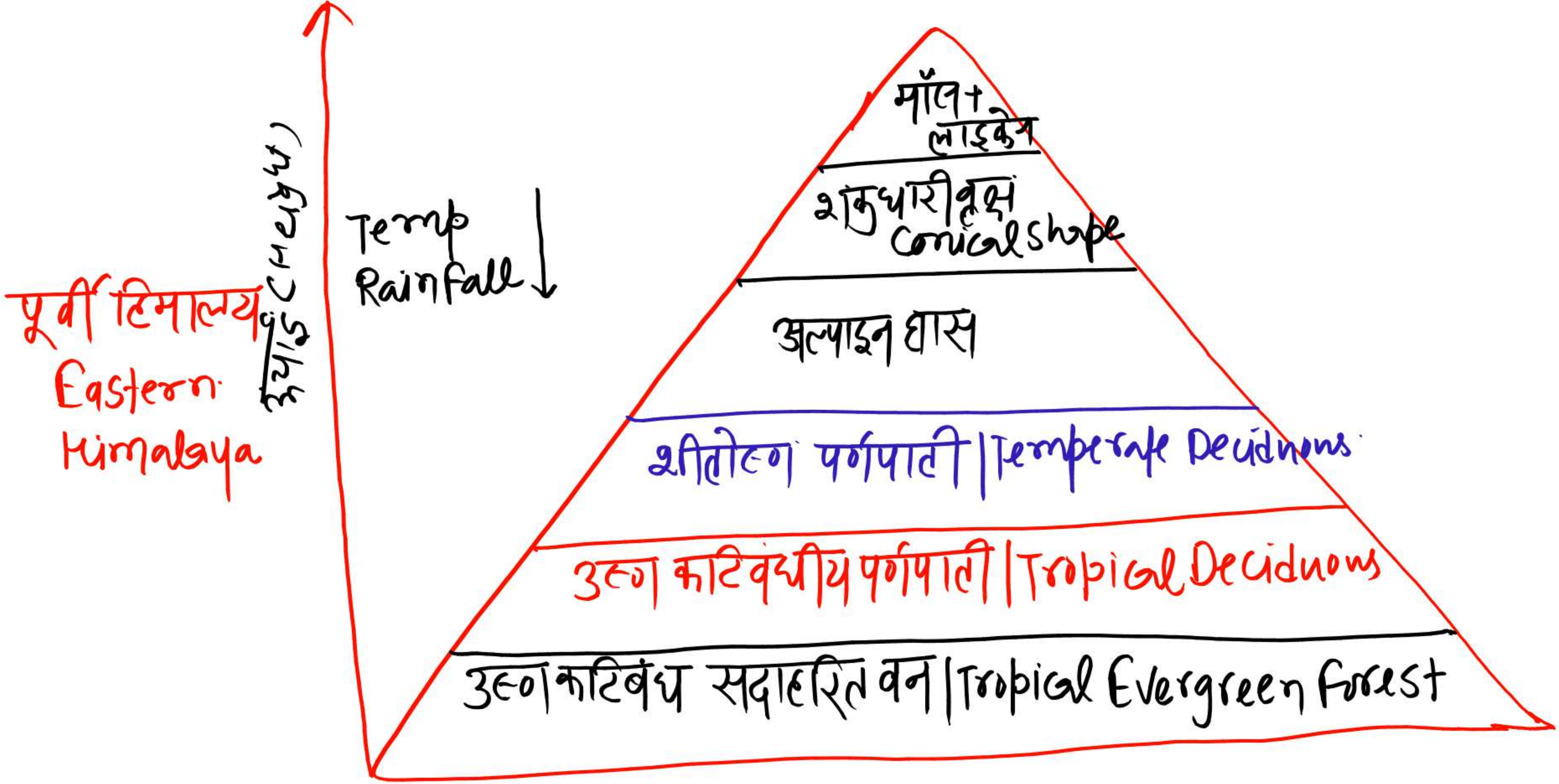
पूर्वी हिमालय
Eastern Himalaya
ऊँचाई (Height)
Temp
Rainfall ↓
मॉस + लाइकेन
शंकुधारी वृक्ष
Conical shape
अल्पाइन घास
शीतोष्ण पर्णपाती | Temperate Deciduous
उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती | Tropical Deciduous
उष्ण कटिबंध सदाहरित वन | Tropical Evergreen Forest

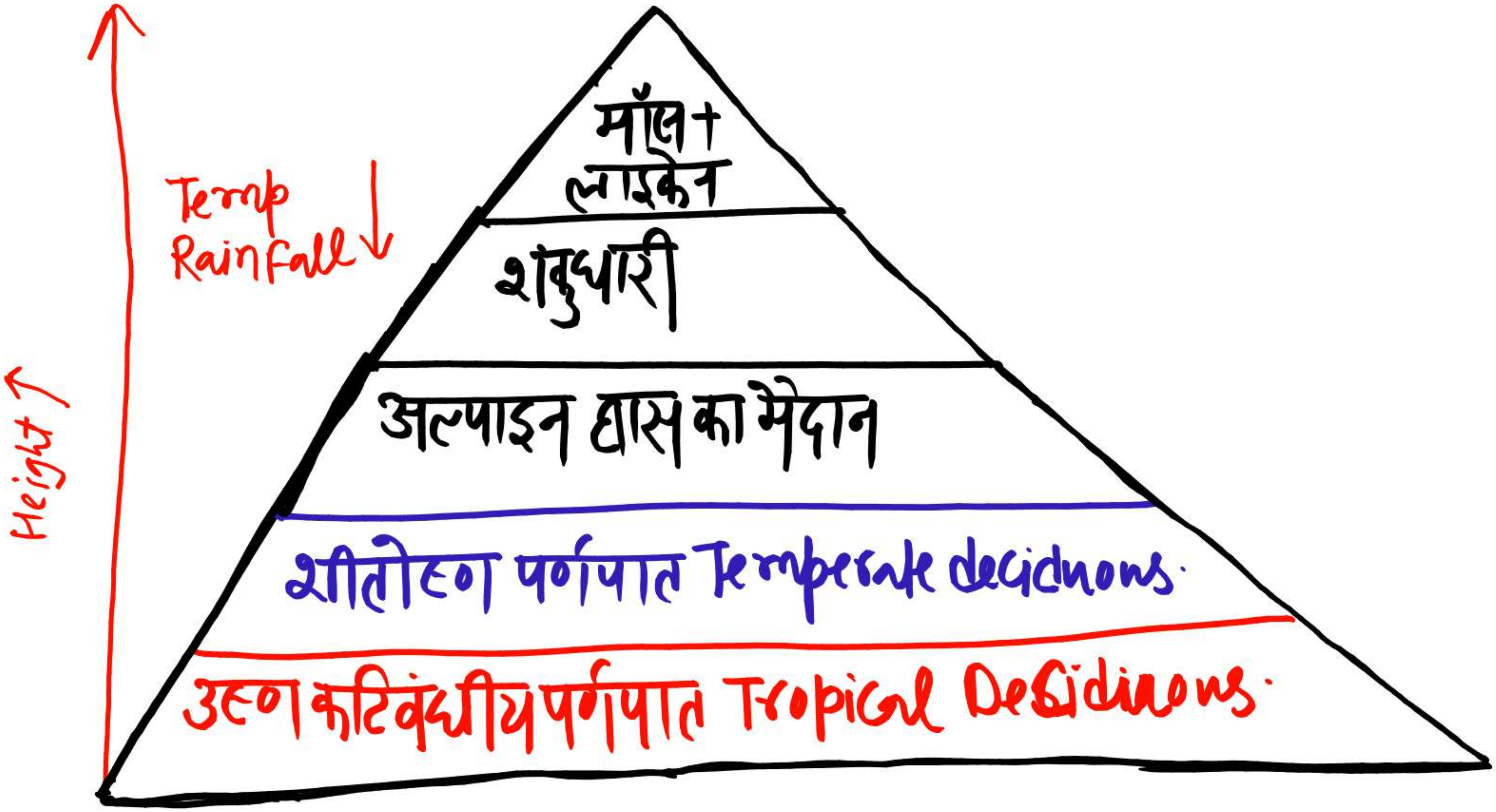

Western Himalaya.

उत्तरी पर्वतीय वन और हिमालय पर्वतमाला के वन

- उष्ण कटिबंध से टुंड्रा कटिबंध तक क्रमिक वनस्पति में ऊँचाई में भिन्नता के आधार पर
  - **पर्णपाती वन:** हिमालय के गिरिपाद में
  - **आर्द्र शीतोष्ण:** 1000 से 2000 मीटर की ऊँचाई तक
  - चौड़ी पत्ती वाले सदाबहार वन - पूर्वोत्तर भारत, उत्तराखंड एवं बंगाल के क्षेत्र में

चीड़ वन

विस्तार: 1500 से 1750 मीटर की ऊँचाई तक

महत्व: वाणिज्यिक महत्व अधिक

वनस्पतियाँ: नीली पाइन और स्प्रूस

अन्य तथ्य:

- पश्चिमी हिमालय में उगने वाला एक स्थानिक पौधा - देवदार
- 2200 से 2300 मीटर की ऊँचाई पर - समशीतोष्ण घास के मैदान

अल्पाइन वन

विस्तार: 3000 से 4000 मीटर की ऊंचाई तक

वनस्पतियाँ: सिल्वर फर, जुनिपर, पाइन, बर्च और रोडोडेंड्रोन

उच्च अक्षांशों पर वनस्पति: मॉस और लाइकेन

- ऋतु प्रवास (Transhumance)

अल्पाइन वन

Imp मैंग्रोव → Mangrove → नम भूमि/आर्द्र भूमि (Wet Land)

- दलदली प्रदेश।
- डेल्टाई प्रदेश।
- एश्चुयरी
- तटीय प्रदेश।
- जहां पर ताजे एवं खारे जल का मिश्रण।

- विकास - दलदली भूमियों, ज्वारीय खाड़ियों, कीचड़ वाली नम भूमियों, नदी मुहाना एवं नदी तटों पर
- जल की प्रकृति- ताजे एवं खारे जल का मिश्रण
- विस्तार - अंडमान निकोबार द्वीप समूह, सुंदरबन डेल्टा, महानदी, कृष्णा एवं कावेरी डेल्टा

→ वैसी वनस्पति जो स्वच्छ जल की तुलना में खारे जल में तेजी से विकसित होती है उसे मैंग्रोव कहा जाता है

भारत में मैंग्रोव का वितरण

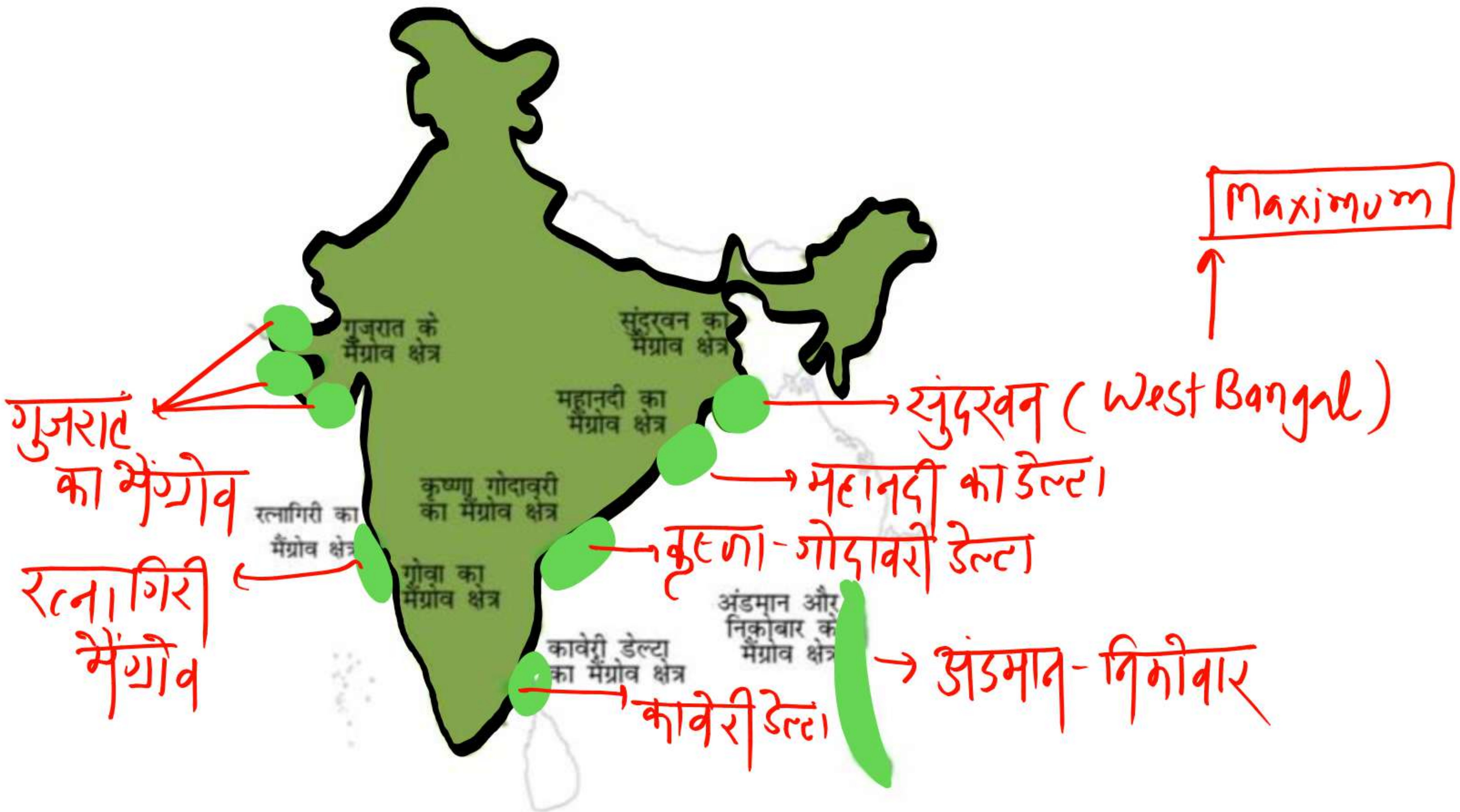
Maximum
गुजरात के मैंग्रोव क्षेत्र
सुंदरवन का मैंग्रोव क्षेत्र
महानदी का मैंग्रोव क्षेत्र
कृष्णा गोदावरी का मैंग्रोव क्षेत्र
रत्नागिरी का मैंग्रोव क्षेत्र
गोवा का मैंग्रोव क्षेत्र
अंडमान और निकोबार के मैंग्रोव क्षेत्र
कावेरी डेल्टा का मैंग्रोव क्षेत्र
गुजरात का मैंग्रोव
रत्नागिरी मैंग्रोव
सुंदरवन (West Bangal)
महानदी का डेल्टा।
कृष्णा-गोदावरी डेल्टा।
कावेरी डेल्टा।
अंडमान-निकोबार

विशेषता Characteristics

- जल का शोधन एवं प्रदूषण को नियंत्रित करते हैं।
- नम प्रदेश में उपस्थिति
- प्रकृति सदाहरित
- खारे जल के प्रति अनुकूलित
- तट से अंदर की तरफ इनकी ऊंचाई बढ़ती है।
- इनकी जड़े विशेष प्रकार की होती है जिसका अधिकांश भाग जल से बाहर होता है।
- तटीय पारिस्थितिकी की सुरक्षा करते हैं।
- तटीय क्षेत्रो में अपरदन/कटाव को रोकती है।
- मैंग्रोव के प्रकार
  - Black मैंग्रोव
  - Red mangrove
  - White मैंग्रोव
  - बेटनवुड मैंग्रोव → झाड़िया
- तटीय क्षेत्रो में निवास करने वाले लोगो को जीविका प्रदान करती है।
- औषधि प्राप्त होती है। (फार्मा उद्योग हेतु कच्चा माल)

भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021
(India State of Forest Report 2021)

- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री द्वारा भारतीय वन सर्वेक्षण द्वारा तैयार "भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021" जारी की गई।
- द्विवार्षिक
- 1987 से प्रारम्भ
- श्रृंखला की 17वीं रिपोर्ट

तैयार कौन करता है → भारतीय वन सर्वेक्षण

(imp)

ISFR → 2021

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के द्वारा जारी की जाती है।

पहली बार → 1987

प्रत्येक दो वर्ष के बाद जारी की जाती है। (द्विवार्षिक रिपोर्ट)

क्यों why → देश में उपस्थित वनों की स्थिति की जानकारी प्रदान करने हेतु।

मुख्य निष्कर्ष

- देश का कुल वन और वृक्षों से भरा क्षेत्र 80.9 मिलियन हेक्टेयर हैं, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 24.62 प्रतिशत है।
- 2019 के आकलन की तुलना में देश के कुल वन और वृक्षों से भरे क्षेत्र में 2,261 वर्ग किमी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। इसमें से वनावरण में 1,540 वर्ग किमी और वृक्षों से भरे क्षेत्र में 721 वर्ग किमी की वृद्धि पाई गई है।
- वन आवरण में सबसे ज्यादा वृद्धि खुले जंगल में देखी गई है, उसके बाद यह बहुत घने जंगल में देखी गई है।
- वन क्षेत्र में वृद्धि दिखाने वाले शीर्ष तीन राज्य
  - आंध्र प्रदेश (647 वर्ग किमी)
  - तेलंगाना (632 वर्ग किमी)
  - ओडिशा (537 वर्ग किमी)

मुख्य निष्कर्ष

- क्षेत्रफल की दृष्टि से, मध्य प्रदेश में देश का सबसे बड़ा वन क्षेत्र है। इसके बाद अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा और महाराष्ट्र हैं।
- कुल भौगोलिक क्षेत्र के प्रतिशत के रूप में वन आवरण के मामले में, शीर्ष पांच राज्य -
  - मिजोरम (84.53%)
  - अरुणाचल प्रदेश (79.33%)
  - मेघालय (76.00%)
  - मणिपुर (74.34%)
  - नागालैंड (73.90%)

Maximum vegetation on basis of Area →

2021 → रिपोर्ट के अनुसार सर्वाधिक वन आवरण वाले राज्य

on the basis of %

क्षेत्रफल के आधार
1. मध्य प्रदेश
2. अरुणाचल
3. छत्तीसगढ़
4. उड़ीसा → महाराष्ट्र

% के आधार पर
- मिजोरम
- अरुणाचल
- मेघालय
- मणिपुर
- नागालैंड

मुख्य निष्कर्ष

- 17 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों का 33 प्रतिशत से अधिक भौगोलिक क्षेत्र वन आच्छादित है।
- इन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में से पांच राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों जैसे लक्षद्वीप, मिजोरम, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, अरुणाचल प्रदेश और मेघालय में 75 प्रतिशत से अधिक वन क्षेत्र हैं, जबकि 12 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों अर्थात् मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा, गोवा, केरल, सिक्किम, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, दादरा एवं नगर हवेली और दमन एवं दीव, असम, ओडिशा में वन क्षेत्र 33 प्रतिशत से 75 प्रतिशत के बीच हैं।
- देश में कुल मैंग्रोव क्षेत्र 4,992 वर्ग किमी है।
- 2019 के पिछले आकलन की तुलना में मैंग्रोव क्षेत्र में 17 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि पाई गई है।

17 States+UT
Forest cover > 33%
Mangrove
Total Area = 4992 Km²
2019 → की तुलना
→ 17 वर्ग Km अधिक है

मुख्य निष्कर्ष

- मैंग्रोव क्षेत्र में वृद्धि दिखाने वाले शीर्ष तीन राज्य ओडिशा (8 वर्ग किमी), इसके बाद महाराष्ट्र (4 वर्ग किमी) और कर्नाटक (3 वर्ग किमी) हैं।

मैंग्रोव में वृद्धि (2019 की तुलना में) → किन राज्यों में हुई है

उड़ीसा → 8 km^2 ↑

महाराष्ट्र → 4 km^2 ↑

कर्नाटक → 3 km^2

छत्र घनत्व श्रेणी के अनुसार वर्गीकृत वनावरण

श्रेणी	विवरण
अत्यन्त सघन वन	70% या अधिक वृक्ष छत्र घनत्व वाली सभी भूमियाँ
सामान्य सघन वन	40% से अधिक, किन्तु 70% से कम वृक्ष छत्र घनत्व वाली सभी भूमियाँ
खुले वन	10% से अधिक, किन्तु 40% से कम वृक्ष छत्र घनत्व वाली सभी भूमियाँ
झाड़ी	10% से कम छत्र घनत्व वाली वन भूमियाँ
गैर वन	उपरोक्त किसी भी श्रेणी में शामिल नहीं की गई भूमियाँ (जल सहित)

मृदा (Soil)

→ pre
→ mains

भूपर्पटी का ऊपरी अवशादी परत जो कि असंगठित खनिजों एवं जैविक पदार्थों का मिश्रण होती है उसे ही मृदा कहा जाता है।

Upper Sedimentary Layers of crust That is The Composition of Decomposed minerals and Biotic Matarials

Meaning
तात्पर्य

- Minerals / खनिज
- जैविक पदार्थ / Biotic Matarials
- खनिज → असंगठित
- Minerals → Decomposed
- भूपर्पटी | Crust
- ऊपरी भाग | Upper Part

मृदा (Soil)

→ Formation
निर्माण
→ Need of Decomposed minerals
↓
असंगठित खनिज पदार्थ की आवश्यकता
↓
प्राप्ति कैसे
How
←
चट्टानों के विघटन एवं वियोजन
Due to Decomposition of Rock / Due to spliting of Rocks.
चट्टानों के टूटने-फूटने से
←
अवशाद की प्राप्ति
Sediments
↑
→ अवशादों के निक्षेपण की क्रिया से मृदा का निर्माण
Formation of Soil due to Sediments of Rocks.

चट्टानो के विघटन एवं वियोजन से प्राप्त असंगठित खनिजो से मृदा का निर्माण होता है।

Formation of soil due to decomposed minerals

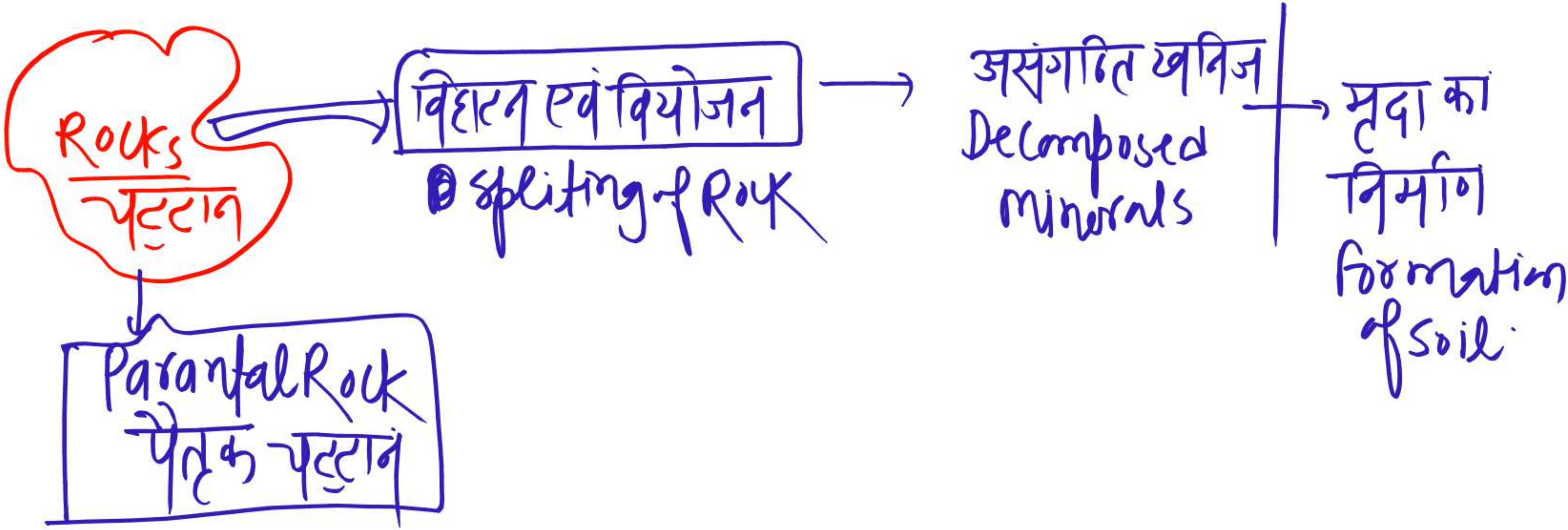

Soil मृदा

- **खनिज पदार्थ** — Decomposed Minerals
  - कई प्रकार के खनिज की उपस्थिति
  - मृदा के उर्वरक क्षमता को भी निर्धारित करते है। Decides the Fertile Capacity
- **जैविक पदार्थ** / organic — Biotic Matarial
  - मृत जैविक पदार्थ
    - ह्यूमस
  - जिंदा जैविक पदार्थ
- **मृदा घोल** — Soil Solution
  - मृदा में उपस्थित जल के साथ घुलित खनिज पदार्थ
- **Soil ATmosphere** — मृदा वायुमंडल
  - मृदा में उपस्थित वायु या विभिन्न प्रकार की गैसें

मृदा का अध्ययन → **Pedology**
Study of soil

↓

मृदा की विशेषता का अध्ययन
Study of characteristics of Soil

← मृदा परिच्छेदिका की सहायता से

→ How → upper Layer of soil
मृदा का ऊपरी भाग

→ मृदा का सबसे निचला भाग
Lowest Layer
↳ Regolith
रेगोलिथ

सबसे ऊपरी परत

Regolith

Soil Horizons
मृदा परत

→ मृदा का अध्ययन | Study of Soil
↳ Soil Profile | मृदा परिच्छेदिका

Soil Profile
मृदा परिच्छेदिका

→ मृदा को लंबवत परतों में वर्गीकृत कर मृदा की विशेषताओं का अध्ययन करना मृदा परिच्छेदिका कहलाता है।

Study of characteristics of soil with the help of vertical layers is known as soil profile.

- → लंबवत गुणों की जानकारी
- → जैविक पदार्थ एवं खनिजो की जानकारी
- → मृदा में उपस्थित नमी की जानकारी
- → ऊपरी परत से नीचे की परतों की तरफ
  - → जैविक पदार्थ में कमी
  - → खनिज पदार्थ में वृद्धि
  - → वायु की मात्रा में कमी
  - → नमी/जल से संबंधित किसी नियम का प्रतिपादन नहीं कर सकते हैं

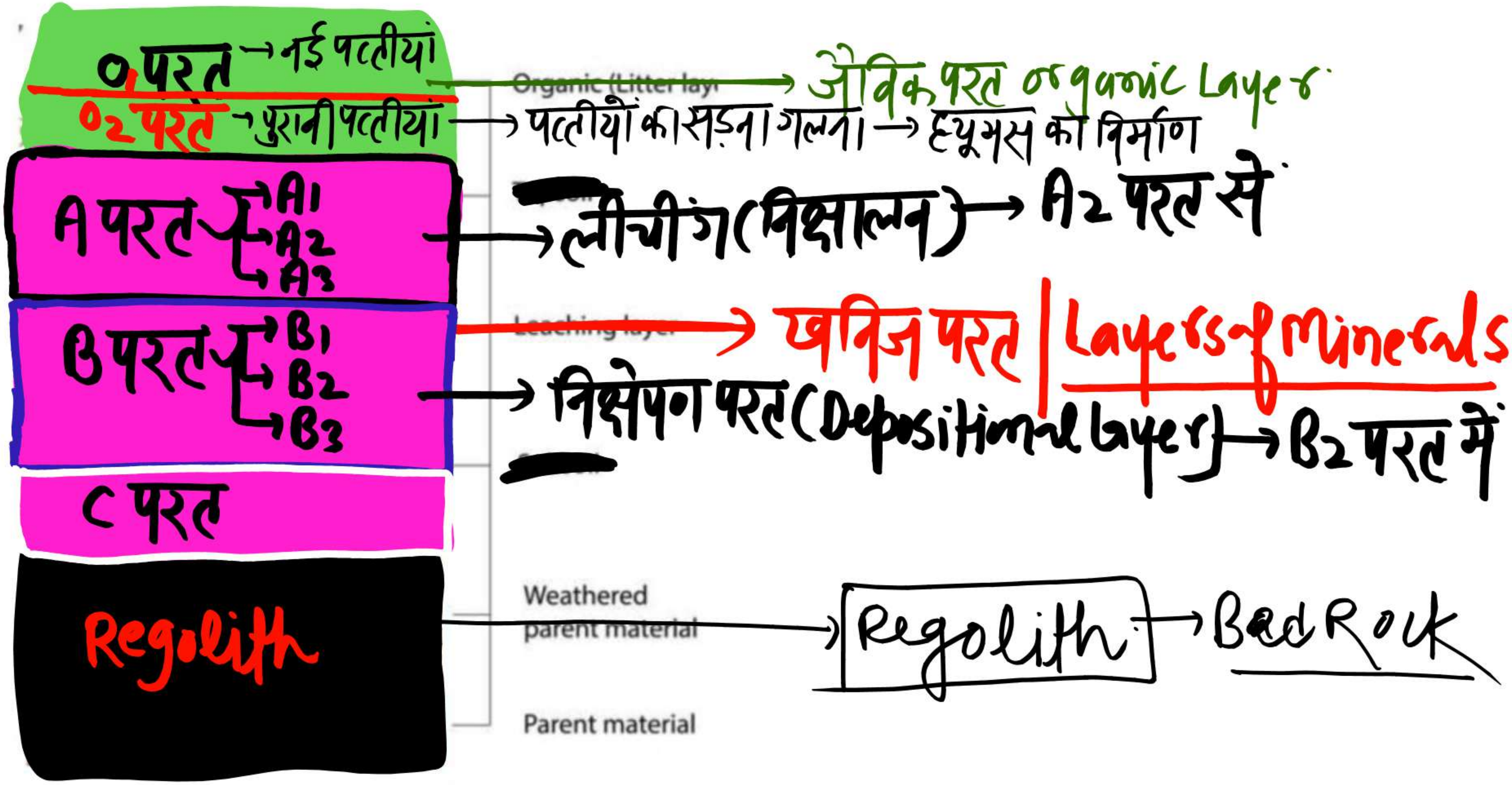
O परत → नई पत्तीयां
O_2 परत → पुरानी पत्तीयां → पत्तीयों का सड़ना गलना → ह्यूमस का निर्माण
Organic (Litter layer) → जैविक परत organic Layer
A परत → A_1, A_2, A_3
→ लीचींग (निक्षालन) → A_2 परत से
Leaching layer → खनिज परत | Layers of Minerals
B परत → B_1, B_2, B_3
→ निक्षेपण परत (Depositional Layer) → B_2 परत में
C परत
Regolith
Weathered parent material
Regolith → Bed Rock
Parent material

निक्षालन (Leaching)-

- मृतिका एवं घुलनशील पदार्थों का यांत्रिक विधि से अधोमुखी स्थानांतरण

लवणीकरण (Salinization) / क्षारीयकरण (Alkalization)-

- वाष्पीकरण की प्रक्रिया के दौरान भूमिगत लवणों का सतह पर आना
  गहन नहर सिंचाई वाले प्रदेशों की समस्याएँ

लवणीकरण
Salinization

जब मृदा में नमक की मात्रा में वृद्धि हो जाती है।

अधिक सिंचाई के कारण

अधिक सिंचाई / गहन सिंचाई कैसे

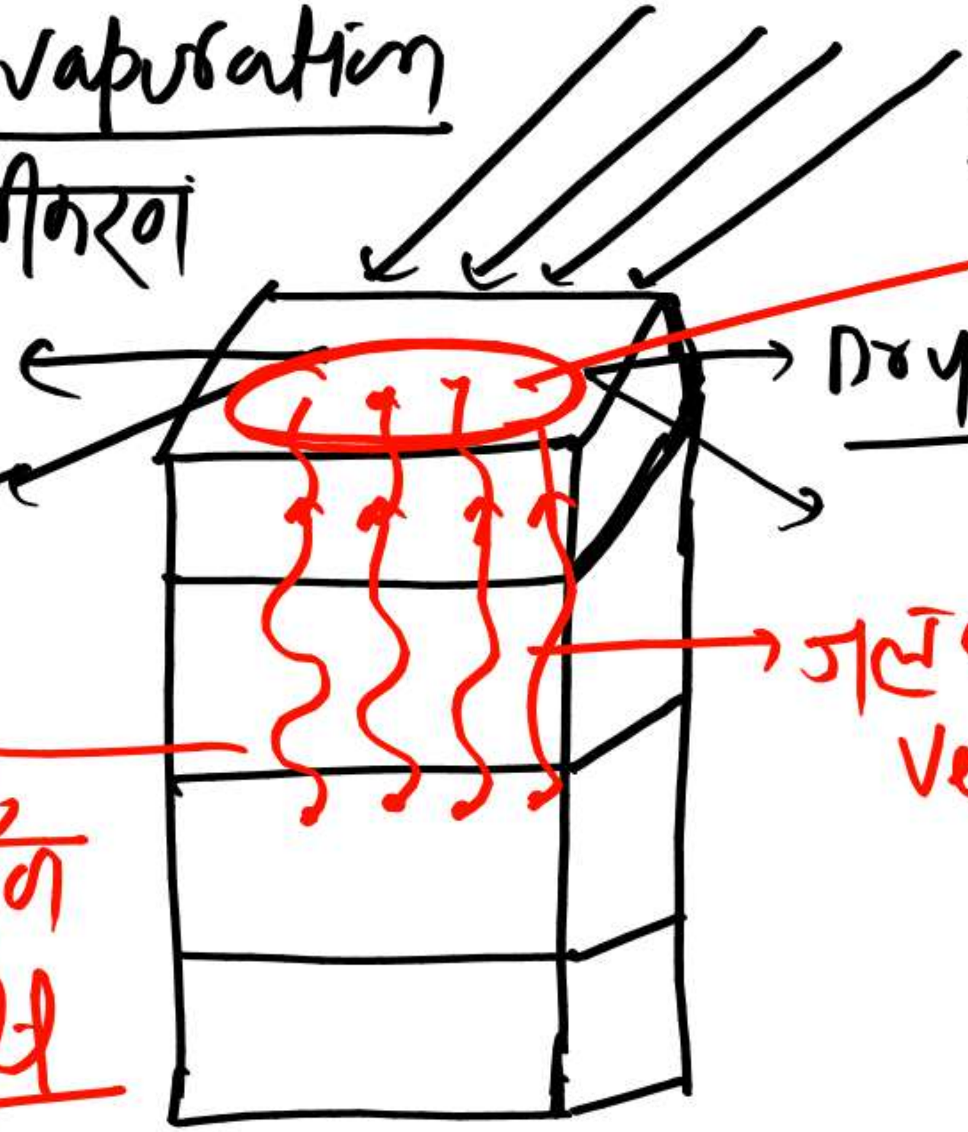

Dry Region
शुष्क प्रदेश। ऊपरी परत में जल की कमी हो जाती है।

Salt / नमक का जमाव
→ नमक की मात्रा ↑
→ लवणीकरण

जल की ऊर्ध्वाधर गति
Vertical Motion
→ Capillary Action
केशिकात्व की क्रिया

लवणीकरण
Salinization
- → प्रमुख कारण → केशिकात्व की क्रिया → वाष्पीकरण की क्रिया
- → अधिक / गहन सिंचाई।

अपवहन (Eluviation)-

- मृतिका एवं घुलनशील पदार्थों का यांत्रिक विधि से अधोमुखी स्थानांतरण

→ Leaching → ऊपर की परतों से खनिज पदार्थ को नीचे की परत में स्थानांतरण

विनिक्षेपड़ (Illuviation)-

- इस प्रक्रिया में अपवाहित पदार्थों का एकत्रीकरण

→ नीचे की परत (B_2 परत) में खनिजों का जमाव

भारत की मृदा | Soil of India

- पर्वतीय मृदा | Mountain soil
- जलोढ़ मृदा | Alluvial soil → दोमट मृदा
- काली मृदा | Black soil | Regur soil
- लाल एवं पीली मृदा (Red and yellow soil)
- लेटेराइट मृदा | Lalarite soil
- मरुस्थलीय मृदा | Desert soil